International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 01-11-2019; Accepted: 03-12-2019; Published: 01-01-2020
Volume 2; Issue 1; 2020; Page No. 01-04

संस्कृत पठन–पाठन के उपादानः एक विहंगावलोकन

शुभंकर मिश्र
संयुक्त निदेशक मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार ६८५ बाबा खड़क सिंह मार्ग, नई दिल्ली, भारत

सारांश
स्वातंत्र्योत्तरकालीन संस्कृत–शिक्षण आंग्ल–शिक्षा के प्रभाव के फलस्वरूप कतिपय परिवर्तनों के साथ संप्रति प्रचलित एवं व्यवहृत है । पहले कभी संस्कृत शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' था जो व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से आज भी पुनीत है परंतु यह अब इस भौतिकवादी परिदृश्य में 'सा विद्या या नियुक्तये' मात्र में परिवर्तित हो गया है । यह सत्य है कि भारत में संस्कृत शिक्षा का परिदृश्य प्राथमिक स्तर पर नगण्य है परंतु माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर इसकी दशा एवं दिशा अपेक्षाकृत संतोषजनक है । इस क्रम में यहाँ यह तथ्य ध्यानाकर्षण योग्य है कि विदेशों में संस्कृत–शिक्षा की दशा माध्यमिक एवं विशेषकर प्राथमिक स्तर पर आशाजनक है । यह भाषा विदेशी एवं अनिवासी भारतीयों के मध्य सोत्साहपूर्वक पढ़ी जा रही है । परंपरागत एवं आधुनिक संस्कृत शिक्षा हेतु प्रचलित नीति एवं रीति के तहत संस्कृत–शिक्षा का यह निदर्शनात्मक आकलन भाषा–विशेष के पठन–पाठन की विद्यमानता एवं इसकी दिशा को समेकित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है।

मूल शब्दः संस्कृत–शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च–शिक्षा

प्रस्तावना
विदित ही है कि आंग्ल–शिक्षा के प्रभाव के फलस्वरूप भारत में संस्कृत–शिक्षण की व्यवस्था किंचित् परिवर्तित हो गई है । भारतीय शिक्षा प्रसंगतः संस्कृत शिक्षा दो रूपों में विभक्त हो गई है – परंपरागत शिक्षा और आधुनिक शिक्षा। परंपरागत शिक्षा, जहाँ पाठशालाओं एवं टोलों में चलती रही । आधुनिक शिक्षा का प्रचलन नवीन पद्धति से संचालित विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में है, जिनमें शिक्षा की व्यवस्था निम्नलिखित स्तरों पर की गई है.

- कद्ध प्राथमिक शिक्षा
- खद्ध माध्यमिक शिक्षा
- गद्ध उच्च शिक्षा . महाविद्यालयीय, विश्वविद्यालयीय एवं शोध संस्थाओं के स्तर पर

d) प्राथमिक स्तर परः विदित ही है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के अनन्तर भारतीय शिक्षा पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित रही है । संप्रति विद्यालयों में रोजगार आदि की दृष्टि से विषय.विशेष की उपयोगिता के आधार पर पाठ्य विषयों के चयन होने लगे हैं । परिणामस्वरूप संस्कृत उपेक्षित होने लगी है । वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के ढांचे में संस्कृत प्राथमिक स्तर पर कतिपय विद्यालयों में पांचवी कक्षा अन्यथा सामान्यतः छठी कक्षा से पढ़ाई जाती है । प्राथमिक स्तर के संस्कृत पाठ्यक्रमों में प्रायः नैतिक विकास के लिए शिक्षात्मक उपदेश, स्मरण रखने के लिए कतिपय सुभाषित अंशों की व्याख्या एवं श्रेष्ठ तथा वीर व्यक्तित्वों की कहानियों के समावेश होते हैं । संस्कृत भाषा–शिक्षण के क्रम में प्राथमिक स्तर पर छात्राों के शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता है ।
भारत में संप्रति 6,51,064 प्राथमिक एवं 2,45,322 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं, जो विभिन्न राज्य सरकारों से मान्यता प्राप्त हैं ।[प] उल्लेखनीय है कि देश के अधिकांश विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था यद्यपि वैकल्पिक रूप में उपलब्ध है तथापि इनमें उत्तराखंड राज्य संस्कृत माध्यम से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की स्थापना के लिए कटिबद्ध प्रतीत होता है । राज्य सरकार द्वारा प्रथम चरण में ऐसे 19 विद्यालय खोले जाने की योजना है ।[पप]

गर्व की बात है कि देश से इतर विदेशों के कतिपय विद्यालयों में भी संस्कृत पठन–पाठन की व्यवस्था विद्यमान है । ऐसे कतिपय विद्यालयों के नाम यहाँ उल्लेखनीय हैं –

- सेंट जेम्स स्कूल, लंदन, इस विद्यालय में 4–18 वर्ष के छात्राों के लिए संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध है । [iii]
- जॉन स्कॉट्स विद्यालय, डबलिन, प्राथमिक से माध्यमिक स्तर पर्यंत संस्कृत शिक्षण ।[iv]
- जॉन कॉलेट स्कूल, सिडनी, प्राथमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण व्यवस्था । [v]
- फिलॉसाफी डे स्कूल, न्यूयार्क, नर्सरी से पांचवीं कक्षा पर्यंत संस्कृत–शिक्षण ।[vi]

मोटे तौर पर भारतीय परिदृश्य में प्राथमिक स्तर पर संस्कृत–शिक्षा का परिदृश्य बेशक हमें संतोष का भाव मात्र प्रदान करता हो परंतु विदेशी स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण का परिदृश्य निःसंदेह उत्साहवर्धक है ।

ख) माध्यमिक स्तर परः प्राचीनकाल की समादृत भाषा संस्कृत का भारतीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर शिक्षण त्रिभाषा–सूत्र के अंतर्गत किया जाता है । त्रिभाषा–सूत्र के अंतर्गत संस्कृत भारतीय विद्यालयों में तृतीय भाषा के रूप में वैकल्पिक तौर पर पढ़ाई जाती है ।[अपप] यहाँ यह उल्लेखीय है कि स्वतंत्रता से पूर्व विदेशी शासन काल में संस्कृत माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी । स्वातंत्रयोत्तर भारत में माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के मार्ग में यद्यपि बाधाएँ अधिक हैं तथापि संस्कृत हमारी संस्कृति की भाषा है, की मान्यता को दृष्टि में रखते हुए व्यवहारतः यह भारतीय विद्यालयों में सर्वत्र पढ़ाई

जाती है । माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण हेतु शासकीय स्तर पर पर्याप्त आधारभूत सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, जो संस्कृत प्रचार–प्रसार में साधक बनती है । शिक्षा के अन्य स्तर –उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संस्कृत का प्रभुत्व यद्यपि अत्यल्प है परंतु नगण्य कथमपि नहीं है । आजीविका कमाने में संस्कृत की उपयोगिता कम प्रतीत होने के कारण इस स्तर पर संस्कृत पठन–पाठन की स्थिति में तभी सुधार हो सकता है, जब यह भाषा अर्थोन्मुखी बने । उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इसकी अल्प लोकप्रियता निःसंदेह सरोकार का विषय है ।

(ग) महाविद्यालय / विश्वविद्यालय के स्तर पर : स्वातंत्र्योत्तर भारत के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था सभी स्तरों पर देखी जा सकती है । महाविद्यालयीय स्तर पर स्नातक, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रायः सभी मान्यताप्राप्त सरकारी विश्वविद्यालयों में हैं । भारतीय विश्वविद्यालय संघ ;।प्द्ध के आंकड़े बताते हैं कि भारत में 282 विश्वविद्यालय हैं, जिनमें 112 विश्वविद्यालयों एवं 10,000 संस्कृत महाविद्यालयों में संस्कृत अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है । उल्लेखनीय है कि भारत वर्ष के विभिन्न भागों में शासन द्वारा संस्कृत विश्वविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यापीठोंए मानित विश्वविद्यालयों की स्थापना भी की गई है । इन विश्वविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन हेतु संस्कृत, माध्यम के रूप में प्रचलित है । इन संस्कृत विश्वविद्यालयों के नाम निम्नलिखित प्रकार से हैं –

- संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार
- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली
- श्री लालबहादुरशास्त्रि राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
- श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी
- श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालड़ी
- कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
- कुमार भाष्कर वर्मा संस्कृत एंड एनसिएंट स्टडीज यूनिवर्सिटी, आसाम
- उत्त्राखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
- श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरूपति
- जगद्गुरू रामनंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, सोमनाथ, बेरावल
- महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन
- कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बंगलुरू
- राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति

संस्कृत के इन सभी विश्वविद्यालयों में महाविद्यालयीय एवं शोध के स्तर पर संस्कृत अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है ।

(घ) शोध–संस्थाओं के स्तर पर: आधुनिक शिक्षा पद्धति के अंतर्गत संस्कृत में बी.ए.,एम.ए. एवं परंपरागत शिक्षा पद्धति के अंतर्गत शास्त्री एवं आचार्य पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त देश के अनेक विश्वविद्यालयों में जहाँ–जहाँ संस्कृत विभाग स्थापित हैं, वहाँ संस्कृत में शोधकार्य संपादित करने की व्यवस्था भी उपलब्ध है । संस्कृत विश्वविद्यालयों में संपादित शोधकार्य की भाषा संस्कृत ही होती है । इन संस्थाओं के माध्यम से संस्कृत में विपुल मात्राा में शोधग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं । केंद्रीय संस्कृत आयोग के सुझावों के परिणाम स्वरूप संस्कृत की सर्वांगीण उन्नति हेतु सरकार एवं संस्कृत के कर्मठ विद्वानों के वैयक्तिक प्रयत्नों से संस्कृत एवं प्राच्यविद्याओं के अध्ययनार्थ अनेक उच्च शोध संस्थान स्थापित किए गए हैं । कतिपय ऐसे शोध–संस्थाओं का उल्लेख यहाँ चर्चा की संपूर्णता के लिए अपेक्षित है । इन संस्थानों की एक निदर्शनात्मक सूची यहाँ प्रस्तुत है –

- इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी
- भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे
- डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे
- वैदिक संशोधन मंडल, पुणे
- गामा ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मुम्बई
- ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर
- विश्वेश्वरानंद वैदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट, होशियारपुर
- बी.एल. इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, दिल्ली
- कुप्पुस्वामी शास्त्राी रिसर्च इंस्टीट्यूट, चेन्नई
- द आद्यार लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर, आद्यार, चेन्नई
- महाबोधि सोसाइटी, हाबड़ा
- गोमांतक संस्कृत परिषद, केरी पोर्ट, मंडल, गोवा
- मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट, दरभंगा, बिहार
- के. पी जायसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट, म्यूजियम बिल्डिंग, पटना
- बी. जे. इस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग एंड रिसर्च, अहमदाबाद
- एल. डी. इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, अहमदाबाद
- सिंधिया ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, उज्जैन

निःसंदेह शोध के स्तर पर संस्कृत किसी भी भाषा एवं विषय से कथमपि निम्नतर नहीं है। संस्कृत शोध की दशा एवं दिशा के सम्यक् आकलन में अंग्रेजी, हिंदी एवं संस्कृत में प्रकाशित शोध पत्र–पत्रिकाओं का उल्लेख चर्चा की संपूर्णता के लिए विशेषतः अपेक्षित है । ऐसे शोध पत्र–पत्रिकाओं की एक निदर्शनात्मक सूची यहाँ उद्धृत है –

(i) संस्कृत की शोध–पत्रिकाएँ

- अजस्त्रा, लखनऊ
- आरण्यकम्, संस्कृत प्रसार परिषद्, आरा, बिहार
- इतम्, अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ
- सागरिका, सागरिका समिति, संस्कृत विभाग, डॉ. एच.एस. गौड़, विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश
- सरस्वती सुषमा, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- संस्कृत विमर्श, होशियारपुर
- वेद सविता, वेद संस्थान, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली
- विश्वसंस्कृतम्, वी. आर. आई. होशियारपुर

(ii) संदर्भित शोध–पत्रिकाएँ (Referred Journals**)**

- Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona
- Ancient India, Bulletin of the Archaeological Survey of India, New Delhi
- Brahma- Vidya, The Theosophical Society, Adyar (Chennai)
- CASS Studies: Centre of Advanced Studies in Sanskrit, University of Poona, Pune
- Epigraphia Indica, Delhi
- Indian Historical Quarterly, Kolkata
- Indian Linguistics, Poona
- Journal of the Asiatic Society, Kolkata
- Journal of the Bihar Research Society, Patna
- Journa of the Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha, Allahabad

(iii) द्विभाषिक/बहुभाषिक शोध–पत्रिकाएँ (Bi-lingual/Multilingual Journals**)**

- Anviksha, Department of Sankrit, Jadavpur University, Kolkata
- Avadh University Research Journal, Faculty of Arts, Faizabad
- Bulletin of the Deccan College Research Institute, Poona
- Bulletin of the Government Oriental Manuscripts Library, Chennai
- Jouranl of the Jain Vishva Bharati, Ladanu
- Journal of the Kerala University Oriental MSS Library, Trivandrum
- Kurukshetra University Research Journal, Arts and Humanities, Kurukshetra, Haryana
- Madhya Bharati, Sagar University, Sagar
- Naimsiyam, Puranic and Vaidika Adhyayana evam Anusandhana Naimaisarany, Sitapur
- Shodha Patrika, Institute of Rajasthan Studies, Janardanarai Nagar, Rajasthan
- Swadhyaya, Oriental Research Institure, Baroda (Gujarat)
- Tirumala Tirupati Devasthanam Journal, Tirupati
- Venkateshwara University Oriental Journal, Tirupati
- Journal of Oriental Institute, MS University of Baroda, Vadodara
- Journal of Oriental Research, Chennai
- Vishveshwaranand Indological Journal, VVB Insttute of Sanskrit Studies, Hoshiarpur,
- Sanskrit Vimarsha, Rashtriya Sanskrit Sansthan
- Shodha-Prabha : A Research Journal of Shri Lal Bahadur Shastri Kendriya Sanskrit Vidyapeetha, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi. 110016

संस्कृत आयोग के सुझावों के फलस्वरूप 14 फरवरी, सन् 1958 को नई दिल्ली में भारतीय विद्या समिति की छठी बैठक में दुर्लभ पांडुलिपियों के प्रकाशन के विषय में पहली बार विचार किया गया । तत्पश्चात् विभिन्न शासकीय एवं वैयक्तिक प्रयत्नों से संस्कृत के दुर्लभ ग्रंथों एवं पांडुलिपियों का प्रकाशन द्रुत गति से चल पड़ा । भारत सरकार के प्रयत्नों से राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन का भगीरथ प्रयास इस क्षेत्र में स्तुत्य है । साथ ही इस दिशा में भारत सरकार की संस्था राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के प्रयास भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं हैं । संस्थान के प्रयासों से दुर्लभ पुस्तकों को संप्रति डिजिटाइज्ड रूप में भी प्रकाशित किया जा रहा है ।

निष्कर्ष

संस्कृत पठन–पाठन एवं उसे प्रभावित करने वाले धार्मिक, राजनैतिक आदि कारकों के विश्लेषण के उपरांत यह सुस्पष्ट है कि भारत में संस्कृत–शिक्षा का भविष्य यदि अति उज्ज्वल नहीं तो निराशाजनक भी नहीं है । भारतीय परिदृश्य में संस्कृत शिक्षा की स्थिति यद्यपि संतोषजनक है तथापि इस दिशा में अभी मीलों चलने की आवश्यकता है । बदलती सामाजिक व्यवस्था, बदलते सामाजिक संबंध, आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति, औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ते कदम आदि कतिपय ऐसे निर्णायक कारक हैं, जिनके अनुसार संस्कृत–शिक्षा की प्रकृति का विनिश्चयन समाज एवं शासन के स्तर पर वांछित है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत संस्कृत शिक्षा प्रणाली को संगठित एवं विकसित करने के लिए शासन तंत्र प्रयत्नशील है । भारतीय मनीषियों के शिक्षा विषयक चिंतन के साथ पाश्चात्य दृष्टिकोण को भी आधुनिक संस्कृत शिक्षण में समाविष्ट कर संस्कृत–शिक्षण संबंधी नीतियों का निर्माण निःसंदेह संस्कृत प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है तथापि संस्कृत–शिक्षा को अपेक्षाकृत संगठित करने के लिए शासकीय तौर पर जहाँ अभी और जागरूक नियोजन एवं कुशल क्रियान्वयन की आवश्यकता है, वहीं वैयक्तिक यानी लाभार्थियों के स्तर पर असीम धैर्य, गंभीर मनन एवं अटूट दृढ़ता की आवश्यकता है ।

इसमें कोई दो राय नहीं कि संस्कृत–शिक्षा में भावी पीढ़ियों के लिए बौद्धिक सामर्थ्य प्रदान करने की पर्याप्त क्षमता है । बस आवश्यकता है, इसके पर्याप्त दोहन की ।

संदर्भ ग्रंथ

1. उपाधायाय, डॉ. बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा संस्थान, वाराणसी, 1978
2. जौहरी एवं पाठक, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1961
3. नरूला, सैयद एवं नायक, जे. पी., भारतीय शिक्षा का इतिहास ;हिंदी संस्करण द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, लिमिटेड, नई दिल्ली, 1976
4. मिश्र, डॉ. कमलाकांत, संस्कृत साहित्य परिचय, एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली
5. Altekar, A. S., Education in Ancient India, (Benaras 1944), Gyan Publishing House, 2009
6. Banerjee S.C, A Companion to Sanskrit Literature, Motilal Banarsi Dass, New Delhi,1971
7. Govt. of India's Report on Sanskrit year 2000 towards Promotion of Children Literature in Sanskrit
8. Mukharji, R.K. Ancient Indian Education, Motilal Banarsidass, New Delhi
9. National Tables on School, Physical and Ancilliary Facilities, N.C.E.R.T., New Delhi
10. Tripathi Radhavallabh (ed.), Sixty Years of Sanskrit Studies, (Abroad) Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, 2012
11. Tripathi Radhavallabh (ed.), Sixty Years of Sanskrit Studies, (India), Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, 2012
12. www.sahitya-akademi.gov.in/
13. www.samskritabharati.in/
14. www.sanskritdocuments.org/
15. www.sanskrit.nic.in/
16. www.shodhganga.inflibnet.ac.in/

[i]National tables on School, Physical and Ancillary facilities, NCERT, New Delhi

[ii] Uttarakhand seems all set to open Sanskrit medium primary schools from the next academic session. Shivani Saxena, Jan 1, 2015, Times of India.

[iii] St James' Schools, London, age 4-18 : Warwick Jessop, head of St James' Sanskrit department. Source. www.ndtv.com/article/world/sanskritthrivinginukschools34267

[4] John Colet School, Sydney, primary school : Why schools outside India teach Sanskrit - http://samskritabharati.in/archives/774 1/2

5 Philosophy Day School, New York, Nursery – fifth grade : Why schools outside India teach Sanskrit - http://samskritabharati.in/archives/774 1/2

[6] Position Paper : National Focus Group on Teaching of Indian Languages, NCERT, New Delhi.